शशि शेखर कु० आजाद
मधेपुरा महाविद्यालय
मधेपुरा (B.Ed)

UNIT — IVth

विषय- स्कूल विद्यालय और समाज
वर्ग- बी॰एड (प्रथमवर्ष)

Issues of Masculinity and Feminity
पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व मुद्दे)

पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है यह है कि उनके कार्यों के अनुसार विशिष्टीकरण कर दिया गया है। समाज में लिंग विशिष्टीकरण के अनुसार पुरुषों को आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया गया है। ~~समाज~~ में उन्हें परिवार में सर्वोच्च की स्थिति प्रदान की गई है। भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है, इस कारण परिवार की धन, सम्पत्ति तथा सत्ता पुरुषों के हाथ में निहित है। महिला को सदैव पराये घर का माना जाता है। इसे अपने घर माना है यह भाव बचपन से ही उसके मन में डाले जाते हैं। और इसी कारण उनसे यही आशा की जाती है कि वह सभी घरेलू कार्यों को करने में समर्थ बने। उसे घर गृहस्थी के कार्यों में प्रवीण बनाने का कार्य प्रयास किया जाता है। पराया धन की भावना के कारण ही उसकी शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान न देना उसका दहेज धन की बर-बादी माना जाता है। ससुराल में भी उसे पराये घर से आई हुई माना जाता है तथा महत्वपूर्ण मामलों में जैसे सम्पत्ति की खरीदारी, विवाह आदि अवसरों पर उसकी सलाह नहीं ली जाती है। यह विडम्बना ही है कि महिला द्वारा जन्में बच्चे उस नये परिवार का हिस्सा माने जाते हैं, जबकि महिला को दूसरे परिवार का सदस्य मानकर उनसे भेद-भाव किया जाता है। परिवार तथा समाज लिंग विशिष्ट भूमिका के निर्वाह की उनसे आशा की जाती है। तथा घर हो या समाज पुरुष एवं महिला की भूमिका भिन्न मानी गयी है। पुरुष एवं स्त्री दोनों बराबर मिलकर ही किसी समाज का निर्माण करते हैं। यह दोनों ही गाड़ी के दो पहिये माने जाते हैं। जीवन रूपी गाड़ी चलाने के लिये इन दोनों ही लिंग के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जीवन की सकारात्मक उन्नति तथा ~~सम्~~ सम्वृद्धि के लिये सब दोनों ही लिंगों का न केवल मिलित होना ही आवश्यक है, बल्कि जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनुकूलन करना भी आवश्यक है।

भारतीय समाज में पुरुषों तथा महिलाओं की भूमिकाओं का विभाजन हो गया है। समाज में पुरुष लिंग की भूमिका महिला लिंग से भिन्न रूप में देखी जाती है।